

कक्षा : सातवीं : गतिविधि

परिचय

पूरक पाठ्यपुस्तक	बाल महाभारत कथा
पाठ	अश्वत्थामा
शीर्षक	वाद- विवाद
समय	दो कालांश
प्रकार	सामूहिक
विद्यार्थी संख्या	दस
कौशल	तार्किकता, वाक्पटुता ,आत्मविश्वास एवं सटीकता
आवश्यक सामग्री	रंगीन कागज़, कलम और कार्यपत्र

चरण:-

1.शैक्षिक अधिगम:-

- * विद्यार्थी किसी भी समूह के समक्ष तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात को रखने की कला को सीख सकेंगे।
- *स्वाध्याय का महत्व समझ सकेंगे।
- *विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का संचार होगा और दूसरों की बात को मद्देनज़र रखते हुए अपनी बात से उन्हें सहमत करने की कला में निपुण हो सकेंगे ।
- * विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, वाक्पटुता के स्तर में वृद्धि हो सकेगी ।

2.अध्यापिका गतिविधि :

- *अध्यापिका द्वारा कक्षा के सभी विद्यार्थियों को दस-दस के समूह में विभाजित किया जाएगा
- *सभी समूहों को 'अश्वत्थामा' पाठ पढ़ने का तथा अश्वत्थामा द्वारा प्रतिशोध में लिए गए निर्णय पर पुनर्विचार करने को कहा जाएगा ।
- * तत्पश्चात अध्यापिका वाद-विवाद के लिए विषय देगी "प्रतिशोध उचित या अनुचित " और प्रत्येक समूह को पक्ष अथवा विपक्ष में से एक का चयन कर अपना तर्क देने को कहेंगी।
- *अध्यापिका कार्यपत्र करने के लिए देंगी ।
- *अध्यापिका अंत में निर्धारित प्रारूप के आधार पर कार्य का मूल्यांकन भी करेंगी ।

3. विद्यार्थी -गतिविधि:-

- *सभी विद्यार्थी विषय को समझ, अनुभूति ,जागरूकता आदि के आधार पर अपने वाद-विवाद को प्रस्तुत करेंगे।
- *सभी विद्यार्थी कार्यपत्र पूरा करेंगे ।
- *आवश्यकतानुसार कुछ मुख्य बिंदुओं से अवगत होने में अध्यापिका की सहायता ले सकेंगे ।

4.मूल्यांकन के मानदंड:-

क्रम संख्या	मूल्यांकन के क्षेत्र	अंक-10
1	विषय की प्रस्तुति	3
2	प्रभावोत्पादकता	3
3	भाषा का स्तर एवं शुद्धता	2
4	कार्य की पूर्णता	1
5	समयबद्धता	1

कार्यपत्र

पाठ: अश्वत्थामा

विद्यार्थी का नाम:

गतिविधि : वाद-विवाद

अनुक्रमांक:

प्रश्न.1. क्रोध और प्रतिशोध की भावना को नियंत्रित करने के उपाय नीचे लिखी आकृतियों में लिखिए ।

प्रश्न.2. रामायण, महाभारत और भारत के इतिहास में बहुत से ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जिन्होंने क्रोध के कारण प्रतिशोध लिया और फिर जीवन भर पछताए या अपना जीवन बर्बाद कर लिया । लोगों को क्रोध के प्रति जागरूक करते हुए ऐसे लोगों के नाम लिखते हुए एक भित्तिचित्र बनाइए ।

क्रोध एक अभिशाप